International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 01 January- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

भवानी प्रसाद मश्र की क वताओं में मानवीय संवेदना

डॉ राजेन्द्र गंगाधरराव मालोकर
हिन्दी वभाग प्रमुख
श्री निकेतन आर्ट्स कॉमर्स कालेज, नागपुर (महाराष्ट्र)

सार

आधुनिक हिन्दी साहित्येतिहास में निराला व दिनकर के अन्तर पं० भवानी प्रसाद मश्र पौरूष के अकेले क व हैं। भारतीय जन-मानस में नव चेतना का संचार करने वाले एक ही साथ सुकुमार एवं पुरूष भावों के उद्‌गाता, वश्व-वादी एवं राष्ट्रीयता के पुजारी तथा युवा चेतना में कसमसाती क्रांति को तीव्र प्रभंजनी स्वर देनेवाले पं० भवानी प्रसाद मश्र हिन्दी क वता के गर्व और गौरव हैं अतीत की चंगारियों को वर्तमान में सुलगाकर ज्योति जगानेवाले, वषमताओं, सामाजिक वकृतियों पर व्यंग्य और वद्रोह की उपलवृष्टि करने वाले हिन्दी क वता के छायावाद की कुहे लका से बाहर निकालकर उसे प्रच्छन्न आलोक के देश में पहुंचाने वाले पं० भवानी प्रसाद मश्र पहले क व हैं।

प्रमुख शब्दः क वताओं, भवानी प्रसाद मश्र

परिचय

क व-जीवन के आरंभ से ही भवानी प्रसाद मश्र छायावादी क वता की मूल दृष्टि और काव्य- शल्प के मुहावरे के प्रति वद्रोही बनकर काव्य-सर्जना में प्रवृत्त हुए । उन्होंने अपनी क वता की स्वतंत्र राह स्वयं नि र्मत की और कसी भी तरह की देशी- वदेशी काव्य प्रवृत्तियों के अनुकरण से दूर रहे। उनके क व - मन का निर्माण वाल्मी क - का लदास, कबीर और सूर, भारतेन्दु और पं. रामनरेश त्रिपाठी की स्वच्छन्दता प्रय दृष्टि ने कया। राष्ट्रीय जागरण ने उनकी सर्जनात्मकता में देश-प्रेम के संस्कारों को ब लष्ठ बनाया और मध्य प्रदेश की प्रकृति ने उनमें नया अनुराग पैदा कया। वे एक प्रकार से नर्मदा की तप-त्याग - धारा के परशुराम तेज वाले सन्त - क व हैं। इस आधुनिक संत क व को सत्य कहने और लखने में ही जीवन की सार्थकता दिखाई देती है। वे कसी भी साहित्यिक वाद के भीतर बंधकर नहीं लखते । दरअसल, पराधीनता उन्हें कसी तरह की स्वीकार न थी- न वाद की, न अंग्रेज की, न परायी भाषा की, न अ भव्यक्ति की, न पद - सत्ता की । वे सदैव स्था पत व्यवस्था के वरोध में रहे। द लतों-उपे क्षतों, दुर्भाग्य के मारे ग्रामीण बच्चों के लए उन्होंने सदैव संघर्ष कया । फलस्वरूप उनकी क वता आत्मा भव्यक्ति के भीतर आत्मदान और आत्मप्रसार की क वता है । कहना न होगा उनमें इकबाल और निराला दोनों की अनुगूंज सुनाई देती है ।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 01 January- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

क व परिचय

जीवन परिचय

क ववर भवानी प्रसाद मश्र का जन्म (29 मार्च 1913 ई.) टिगरिया जिला होशंगाबाद (म. प्र.) में हुआ । सीताराम मश्र संस्कारवान व्यक्ति थे और हिंदी-संस्कृत, अंग्रेजी तीनों का ज्ञान रखते थे । रात दिन रामायण का पाठ करते थे और बालक भवानी प्रसाद को क वता सुनाते और याद कराते थे। भवानी प्रसाद की माँ गोमती देवी परोपकारी, वैष्णव संस्कारों की महिला थी । मातृ-संवेदनाओं और पता के काव्य संस्कारों का प्रभाव भवानी प्रसाद के काम पर गहरा हैं । उनकी मान सकता का गठन गाँव - नदी - पर्वत से हुआ । 'छोटी सी जगह में रहता था, छोटी-सी नदी नर्मदा के कनारे, छोटे से पहाड़ वध्यांचल के आंचल में साधारण लोगों के बीच । एकदम घटना वहीन अ व चत्र मेरे जीवन की कथा है। साधारण मध्य वत्त के परिवार में पैदा हुआ, साधारण पढ़ा- लखा और काम भी कए वे भी असाधारण से अछूते । मेरे आस-पास के तमाम लोगों की-सी सु वधाएं - असु वधाएं मेरी थी । नर संहपुर में रहे और पूरे देश को वहीं से पाया । सन् 1934-35 में बी.ए कया और माखनलाल चतुर्वेदी में भेंट की । चतुर्वेदी जी का प्रभाव ऐसा पड़ा क लखना राष्ट्रीय जागरण का पर्याय बन गया । माखनलाल ने इनका नाम रखा, 'बाल मोहन पर अपने निर्णय से उस नाम से मुक्ति पाई। मैंने बहुत छोटी उम्र में लखना शुरू कर दिया था और जो लखना शुरू कर देता है वह समकालीन साहित्य को पढ़ता है। प्रभा की फाइलें पढ़ डाली थी और 'कर्मवीर' हमेशा पढ़ते थे। 'सरस्वती', 'चांद', 'सुधा', 'माधुरी' और ' वशाल भारत' के अध्येता थे ।

रचनाकार - व्यक्तित्व

छायावादोत्तर क वता में भवानी प्रसाद मश्र का नाम अपनी अलग राह और अलग काव्य - खोज, भावचेतना के कारण एक दम व शष्ट है। मुझ पर कन क वयों का प्रभाव पड़ा, यह भी एक प्रश्न है। कसी का नहीं । पुराने क व मैंने कम पढ़े, नये क व जो मैंने पढ़े मुझे जंचे नहीं । मैंने लखना शुरू कया तब अगर श्री मै थलीशरण गुप्त और सया राम शरण गुप्त को छोड़ दें तो छायावादी क वयों की धूम थी। 'निराला', 'प्रसाद' और 'पन्त' फैशन में थे। मेरी कम्बख्ती (जिसे कहने में भी डर लगता है) ये तीनों ही बड़े क व मुझे लकीरों में अच्छे लगते थे। कसी एक की भी एक पूरी क वता बहुत नहीं भा गई। अंग्रेजी स्वच्छन्दतावाद के क वयों मे वर्डसवर्थ और ब्राडनिंग को खूब पढ़ा इधर रवीन्द्रनाथ प्रय क व रहे । वाल्मी क -का लदास तथा भक्ति काल के सन्त क वयों में इनका मन रमा और यह प्रभाव इनके क व कर्म पर साफ झांकता है। वर्ड्सवर्ड की एक बात उन्हें बहुत जँची क 'क वता की भाषा यथासंभव बोलचाल की भाषा हो ।' यह आदर्श उन्होंने अपने रचना-कर्म में जीवन भर पालन कया है क जिस तरह हम बोलते हैं उस तरह तू लख, और उसके बाद भी हमसे बड़ा तू दिख |

मश्र जी को सन् 1943 ई. में तीन साल की जेल हुई । इसी बीच उन्होंने बंगला सीखी तथा बंगला साहित्य के महत्वपूर्ण ग्रंथों का अध्ययन कया । कन्तु वे भारतेन्दु, मै थलीशरण, माखन लाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा नवीन और पं. रामनरेश त्रिपाठी की परंपरा के रचनाकार रहे हैं। फलतः ईश्वर और

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 01 January- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

आध्यात्म के चक्कर में कभी नहीं पड़े। जो मूर्त और प्रत्यक्ष मानव है वही उनके सृजन का लक्ष्य है । क वता में वही लखा जो उनके काव्यानुभव का वषय रहा । झूठी काव्य - गप्प से सदैव दूर रहे। उनके व्यक्तित्व पर नर्मदा और तप - तेज के प्रतीक परशुराम की परंपरा का गहरा प्रभाव पड़ा। कसी भी वाद, दर्शन या टैकनीक के प्रति आकर्षण नहीं रहा । 'संकल्प यही रहा क दर्शन में अद्वैत, वाद में गांधी और टैकनीक में सहज ही लक्ष्य मेरे बन जायें, यही को शश है ।' भवानी भाई पत्रकारिता और क वता में गांधी-वचार दर्शन के जीवन भर श्रद्धावान व्याख्याता रहे। उन्होंने माखन लाल जी की एक बात गांठ बांध ली क तुम्हारा आसान लखना छूट न जाए, इसकी सावधानी रखना । कन्तु यह भी ध्यान रखना क आसान लखना ध्येय नहीं है। ध्येय है लखना, मन की बात, भीतर की बात, भीतर से भीतर की बात, और वह इस तरह क वह न तो सूत्रबद्ध हो न भाष्य । जा मन में न समा सके, उसे वाणी तक लाओ । कन्तु जुबांदराजी मत करो। कलम को जीभ मत बनने देना।' इस संकल्प ने ही ब्रिटिश साम्राज्यवाद पर चोट की और फ्रायड तथा मार्क्स के आतंक से मुक्त रखा। 'गांधी के प्रेम, सत्य, अहिंसा और सत्याग्रह को हर कीमत पर काव्या भव्यक्ति दी और देशभक्ति के आंदोलनों को निर्भय वाणी । गरीब, कसान मजदूर जनता के लए जीवन भर संघर्ष कया और आपातकाल (इमर्जेन्सी) में सरकार की कटु आलोचना की । सच बात यह है क भवानी प्रसाद मश्र का काव्य - व्यक्तित्व एक 'खरे संत योद्धा' के काव्य - व्यक्तित्व का पर्याय रहा है। उनका निधन 20 फरवरी 1985 को नर संहपुर में हुआ ।

कृतियाँ

मश्र जी ने सन् 1930 ई. से काव्य-सृजन शुरू कया और तत्कालीन पत्र-पत्रिकाओं में खूब छपते रहे। क व रूप में उनकी ख्याति 1940 ई. तक फैल गई पर एक साथ बहुत सी क वताएँ 'दूसरा सप्तक' (1951 ई. सं. अज्ञेय) में छपी जिनको पर्याप्त आदर मला । प्रथम काव्य-संग्रह 'गीत फरोश' सन् 1956 ई. में प्रका शत हो पाया। इस अकेले काव्य संकलन की क वताओं ने उनके क व की धाक जमा दी । आधुनिक हिंदी क वता की वकास-यात्रा का यह संकलन एक ऐतिहा सक दस्तावेज है। गांधी- वचार दर्शन से ओतप्रोत पाँच सौ क वताओं का संकलन 'गांधी पंचशती' के नाम से आया । 'च कत है दुख', 'अंधेरी क वताएँ', 'बुनी हुई रस्सी, 'व्यक्तिगत', 'खुशबू के शलालेख', 'परिवर्तन जिए, त्रिकाल संध्या', 'अनाथ तुम आते हो, 'इदं न मम', 'शरीर, क वता, फसलें और फूल', 'मान सरोवर दिन', 'सम्प्रति', 'तुकों के खेल', नीली रेखा तक' तथा 'तूस की आग आदि अन्य प्र सद्ध काव्य-संकलन हैं । इन्होंने एक प्रबंध काव्य की रचना भी की है। 'कालजयी' नामक यह प्रबंध कृति अशोक की कथा पर आधारित होने से ऐतिहा सक प्रबंध काव्यों की श्रेणी में आती है। इसमें ऐतिहा सक कथा के माध्यम से क व ने प्रेम-अहिंसा के मानवीय मूल्यों की स्थापना की है भवानी प्रसाद मश्र का सम्पूर्ण काव्य-सृजन मानवीय मूल्यों की वश्व दृष्टि का अक्षय भण्डार है देश और काल की सीमाओं को अतिक्रान्त करते हुए वे प्रगतिशील चेतना के तेजस्वी रचनाकार है । 'क व' शीर्षक क वता में उन्होंने कहा है 'कलम अपनी साथ / और मन की बात बिल्कुल ठीक कह एकाध / यह क तेरी भर न हो तो कह / और बहते बने सादे ढंग से तो बह/' कहना न होगा क

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 01 January- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

अन्याय और अत्याचार के स क्रय वरोध में खड़े इस क व की वाणी में तलवार से ज्यादा पैनी धार है ।

काव्य संवेदना

काव्यानुभूति

मश्र जी चंतन को अनुभूति में फेंटकर प्रस्तुत करने में दक्ष हैं। नतीजा यह है क उनकी आत्मा भव्यक्ति में भाव उष्मा के साथ आत्म- वस्तार और आत्म-परिष्कार के तत्व प्रधान रहते हैं । मूलत: उनकी काव्य संवेदना में गांधी- वचार दर्शन के मूलाधारों का वस्फोट है और यह वस्फोट गीतात्मक है। नयी क वता में वे एक मात्र ऐसे क व है जिनकी काव्यानुभति में कसान, मजदूर, बच्चे और नारी इन सभी की समस्याओं का दर्द मूल संवेदना में जज्ब होकर सहजता से बोलता है। उन्होंने अपनी काव्यानुभूति का संस्कार स्वाधीनता आंदोलन की मुक्ति चेतना से कया है। अंग्रेज और अंग्रेजियत, पूँजीवाद और उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद और रूसी साम्यवाद सभी पर चोट की है। उनका कथन है 'मैंने अपनी क वता में प्रायः वही लखा है जो मेरी ठीक पकड़ में आ गया है। दूर की कौड़ी लाने की महत्वाकांक्षा भी मैंने कभी नहीं की। बहुत मामूली रोजमर्रा के सुख-दुःख मैंने इनमें कहे हैं जिनका एक भी शब्द कसी को समझाना नहीं पड़ता।'शब्द टप-टप टपकते हैं फूल से / सही हो जाते हैं मेरी भूल से । लोकजीवन की खरी संवेदना ही काव्य का मूलाधार है। काव्यानुभूति में लोक- वेदना का यही संसार घुमड़ता रहता है जैसे

तंग ग लयों में कहीं बच्चे खडे हैं
लाल है पर भाग पत्थर से अडे हैं
धूल के हीरे नहीं अब धूल हैं ये
फूल जंगल के नहीं अब शूल है ये ।

यह काव्यानुभूति उस व्यवस्था और सत्ता की वसंगतियों पर व्यंग्य करती है जिसमें बच्चे तक दरिद्रता में मर रहे हैं । उनका बचपन ससक रहा है 'हाय रे बचपन तलक सुख से न बीता, वाह रे, दरिद्र तूने खूब लूटा ।'

उन्होंने झोपड़ी और महलों की लड़ाई को समझते हुए लखा है क यदि झोपड़ी मटेगी तो महल भी नहीं बचेगा।

एक दिन होगी प्रलय भी
मत रहेगी झोपड़ी मट जायेगा नीलम निलय भी ।

पूँजीपतियों, मुनाफाखोरों, देशद्रोहियों के खून सने जबड़ों की उन्हें सच्ची पहचान है। इस लए उनकी काव्यानुभूति का दर्द सच्चा है । व्यंग्य और वक्रोक्ति से क व मन खौलता मलता है

आप सभ्य हैं क्यों क धान से भरी आपकी कोठी
आप सभ्य है क क्यों क वक्त पर कटवा देते बोटी ।

उनके गांधी - दर्शन की काव्यानुभूति में हर सत्य को निर्भयता से कहने की गजब की ताकत है । 'आपात काल' के दिनों में वे 'त्रिकाल सन्ध्या लखते हैं और सत्ता के क्रूर चरित्र को उधेड़कर रख देते हैं। नयी

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 01 January- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

क वता में उनकी काव्यानुभूति का तेवर कबीरनुमा रहा है। बैनों के बान मारकर वे हर जो खम झेलने की तैयारी करते हैं ।

उनकी काव्यानुभूति में प्रकृति की लय है । भारतीय जीवन की सन्त-लय ने उनकी क वताओं में स्थान पाया है। 'गीत फरोश', 'सतपुड़ा के जंगल', 'सन्नाटा', 'शब्दों के तल्प पर', 'घर की याद, 'त्रिकाल सन्ध्या', 'नीली रेखा तक', 'तूस की आग आदि उनकी ऐसी ही श्रेष्ठ क वताएं हैं। उनकी काव्य-यात्रा अंत तक गांधी जी के वचारों का काव्यानुवाद करती रही। हालां क आजादी के बाद की निराशा, लूट का अंधेरा उनकी काव्यानुभूति में दर्द बनकर बना रहा है। कन्तु इस काव्यानुभूति में अस्तित्ववादी दर्शन की वह अनास्थावादी दृष्टि नहीं है जिससे नयी क वता के अ धकांश क व समझौता कए रहे हैं। वे मानवीयता और अखंड आस्था के भारतीय क व हैं । इस लए उनकी काव्यानुभूति में भारतीय लोक जागरण की परंपरा बिजली-सी कौंध रही है। अहिंसा की प्रेम धारा का प वत्र जल इस काव्यानुभूति को सींच कर शक्ति देता रहा है। यहाँ क वता में नर्मदा का परशुराम तेज तपड़ता है और क वता का स्रोत सतपुड़ा की कठोर च ानों को फोड़कर उमड़ पड़ता है।

क वता की मूल्य दृष्टि

उनकी क वता का प्रधान मूल्य है मानव की मुक्ति, शोषण मुक्त सामाजिकता, गंवई संवेदना की भावभू म का खरापन, सन्त-भाव की करुणा और गांधी- वचार दृष्टि की मूल्य चेतना । इन जीवन मूल्यों को उन्होंने जूझकर कमाया है। इन्हीं मूल्यों की रक्षा के लए उन्होंने अंग्रेजों पर चोट की है और सत्ता के साँड़ों को काबू में करने वाली नकेल डालनी चाही है। जन के सम्बोधन और प्रश्नाकुलता इस काव्यात्मकता में बहुत है और यह इस बात का प्रमाण है क वे सामाजिकता की व्यापक भू म पर क वता को रचते हैं।उन्होंने बार-बार दुहराया है

सच कहो क व आत्मा से पूछकर
सच कहो क व मन कसी का भय करो ।

यहाँ 'आत्मा' शब्द से डरने की जरूरत नहीं है। भारतीय दर्शन का यह शब्द यहाँ अन्तर्मन के अर्थ में आया है-आत्मा के दार्शनिक चंतन - प्रपंच को लेकर नहीं। उनकी क वताओं में गाँव की गरीबी और खेतिहर कसान की पीड़ा है। फर भी कहा यही है

सहो और बेहतर बातों के लए रहो ।

उनके काव्य के मूल्य, गांधी- वचार दर्शन में घुले खादी के मूल्य है । एक प्रकार से यह खादी की क वता है जिसमें एक संस्कृति का इतिहास बोलता है । वे भोले क व हैं पर शंकर का क्रोध उनमें रंग दिखा देता है। इस लए उनके काव्य के बोलों का असरदार हा शया है और न जाने क्या- क्या बोला। पछले साल भवानी भोला ।

इस क वता के स्वाधीनता परक मूल्य दृष्टि और प्रेरणा - शक्ति पर माखन लाल चतुर्वेदी, रामनरेश त्रिपाठी और बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' तीनों की छाप है। उन्होंने नए मानव की हर बात कही है पर ऐसे सांचे

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 01 January- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

में ढालकर क उसके भीतर छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद और नयी क वता का सांचा छोटा पड़ा है । फलतः क वताओं में उनका बल 'नयी' पर कम 'क वता' पर ज्यादा है। ये कहते रहे हैं-

अगर गा न पाये तो हल्ला करेंगे

इस हल्ले में मौत आ गई तो मरेंगे ।

जन-जीवन का हर कोना वे छानते हैं, हर आंख के आंसू पर उनकी दृष्टि अटकी है और सत्ता की हर हरकत पर उनकी लेखनी तलवार की तरह चली है ।

निष्कर्ष

क व-जीवन के आरंभ से ही भवानी प्रसाद मश्र छायावादी क वता की मूल दृष्टि और काव्य- शल्प के मुहावरे के प्रति वद्रोही बनकर काव्य-सर्जना में प्रवृत्त हुए । उन्होंने अपनी क वता की स्वतंत्र राह स्वयं नि र्मत की और कसी भी तरह की देशी- वदेशी काव्य प्रवृत्तियों के अनुकरण से दूर रहे। क ववर भवानी प्रसाद मश्र का जन्म (29 मार्च 1913 ई.) टिगरिया जिला होशंगाबाद (म. प्र.) में हुआ । सीताराम मश्र संस्कारवान व्यक्ति थे और हिंदी-संस्कृत, अंग्रेजी तीनों का ज्ञान रखते थे । रात दिन रामायण का पाठ करते थे और बालक भवानी प्रसाद को क वता सुनाते और याद कराते थे। भवानी प्रसाद की माँ गोमती देवी परोपकारी, वैष्णव संस्कारों की महिला थी ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- प्रभाः सं. माखन लाल चतुर्वेदी, सन् 2012 ई. में, खंडवा, मध्य प्रदेश से निकलने वाली क्रांतिकारी वचारों की पत्रिका |
- टी. एस. इ लयट (2013 ई.) का मूर्त वधान सद्धांत (आब्जेक्टिव कोरिलेटिव) भारतीय रस सद्धांत का वभावन व्यापार है । क वगत भाव की अ भव्यक्ति का प्रधान और अनिवार्य साधन है वभाव | भाव के कारण को वभाव कहते हैं ।
- वश्वनाथ प्रसाद तिवारी : समकालीन हिंदी क वता, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
- कृष्णदत्त पालीवाल : भवानी प्रसाद मश्र का काव्य संसार, साहित्य नि ध, सी-38, ईस्ट कृष्णा नगर, दिल्ली-1100511
- प्रेम शंकर रघुवंशी : भवानी भाई, सरला प्रकाशन, नई दिल्ली ।
- क वता के नये प्रतिमान, डॉ० नामवर संह, पृ0-232 4. गीतफरोश, भवानी प्रसाद मश्र, पृ0-181
- गीतफरोश, भवानी प्रसाद मश्र, पृ0-182
- आज के लोक प्रय हिन्दी क व भवानी प्रसाद मश्र,पृ0-67
- भवानी प्रसाद मश्र का काव्य संसार डॉ० कृष्णदत्त पालीवाल, पृ0-91

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 01 January- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

- च कत है दुख भवानी प्रसाद मश्र, पृ0 - 15
- बुनी हुई रस्सी, भवानी प्रसाद मश्र, पृ0 - 118
- भवानी प्रसाद मश्र का काव्य संसार, डॉ० कृष्णदत्त पालीवाल, पृ0-28
- भवानी प्रसाद मश्र का काव्य यात्रा (प्रवेश), डा० प्रेम शंकर, पृ0-4
- जिन्होने मुझे रचा, भवानी प्रसाद मश्र, पृ0 - 19
- दूसरा सप्तक (वक्तव्य) भवानी प्रसाद मश्र, पृ0-7
- आज के लोक प्रय क व वाणी की दीनता, पृ0-39 15. र ववार 10-16 मार्च 85 भवानी प्रसाद मश्र, पृ0-37
- धर्मयुग, 17-23 अ प्रल 2015, पृ0-10 19 धर्मयुग, 17 23 अ प्रल 1977, पृ0-10 20. भवानी भाई ले डॉ० चन्द्रप्रकाश वर्मा,